सिंधु से अरावली तक: डीएनए, एंथ्रोपोलॉजी और वैदिक साहित्य के आलोक में मीना (मीणा) इतिहास का वैज्ञानिक विश्लेषण
संकलनकर्ता मोहर सिंह मीना

भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में कुछ ऐसी प्राचीन जनजातियाँ और समुदाय हैं, जिनका अस्तित्व केवल लोककथाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिक विज्ञान (DNA), मानवविज्ञान (Anthropology) और प्राचीनतम ग्रंथों (वैदिक साहित्य) के त्रिकोण पर पूरी तरह प्रमाणित होता है।
इनमें से सबसे प्रमुख और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध समुदाय है—मीना (मीणा) आदिवासी समुदाय।वैश्विक इतिहासकारों और आधुनिक आनुवंशिक वैज्ञानिकों के अनुसंधानों के आधार पर मीना समुदाय के इतिहास, उनकी प्राचीन उत्पत्ति और उनकी सभ्यतागत कड़ियों का एक विस्तृत और प्रामाणिक लेख नीचे दिया गया है:
1. वैदिक और पौराणिक साहित्य का दृष्टिकोण:
मत्स्य और प्रथम अवतारवैदिक साहित्य और हिंदू पौराणिक कथाओं में मीना समुदाय का सीधा संबंध "मत्स्य" (मछली) प्रतीक से जुड़ता है। संस्कृत और प्राचीन भाषाओं में 'मीन' या 'मीना' का सीधा अर्थ मछली होता है।
ऋग्वेद और मत्स्य जनपद: ऋग्वेद (7.18.6) में 'मत्स्य' नामक एक अत्यंत प्राचीन और शक्तिशाली कबीले/जनपद का उल्लेख मिलता है, जो सरस्वती और यमुना नदियों के बीच (आधुनिक राजस्थान और हरियाणा का क्षेत्र) निवास करता था।
महाभारत काल में भी मत्स्य देश (जिसकी राजधानी विराटनगर थी, जो वर्तमान में जयपुर के पास स्थित है) का बहुत बड़ा राजनीतिक महत्व था।
भगवान विष्णु का मत्स्यावतार और महान जलप्रलय: मीना समुदाय पारंपरिक रूप से अपनी उत्पत्ति भगवान विष्णु के प्रथम 'मत्स्यावतार' (Minavatar) से मानता है लेकिन मेरा मानना है कि मीनाओ के असली देव महादेव है जो मणिकूट पर्वत पर मीन रूप में विराजमान हैं स्कंन्ध पुराण में स्पष्ट कहा गया है मीनाय मीन नाथाय,ए पी करमाकर का भी यही मानना है रूद्रयामल और कुछ पुराण भी इसकी पुष्टि करते हैं
क्योंकि सबसे पहले रूद्र हुए जब धरती पर 6 मनु और 45 प्रजापति हो चुके थे इनको और इनके वंशजों को राक्षसकुल कहा गया है या ये ही आदिवासी कुल है तब मत्स्य अवतार में बिष्णु जी आये 7 वे मनु के समय तब सूर्यवंश और चन्द्रवंशी उत्पन्न हुए । । शतपथ ब्राह्मण और पुराणों के अनुसार, जब प्राचीन दुनिया में एक महान वैश्विक प्रलय (Great Cataclysm/Flood) आया, तब मछली रूपी भगवान ने आदि-पुरुष राजा मनु और सप्तर्षियों को एक विशाल नौका के माध्यम से सुरक्षित बचाया था। यह 'जलप्रलय और मछली' की कथा वैश्विक इतिहास (जैसे मेसोपोटामिया की कथाओं) में भी समानांतर रूप से पाई जाती है।

2. मानवविज्ञान (Anthropology) का दृष्टिकोण:

सिंधु घाटी से द्रविड़ संपर्क 20 वीं सदी के महान इतिहासकारों और मानववैज्ञानिकों ने मीना समुदाय की सामाजिक और भाषाई जड़ों को भारत की

सबसे प्राचीन नगरीय सभ्यता से जोड़ा है।फादर हेनरी हेरास (Father Henry Heras) का अनुसंधान: 1930 और 1940 के दशक में सिंधु घाटी सभ्यता (Mohenjo-daro और Harappa) की लिपि का अध्ययन करते हुए फादर हेरास ने निष्कर्ष निकाला कि सिंधु घाटी के लोग आदि-द्रविड़ (Proto-Dravidians) थे। उन्होंने हड़प्पा की मुहरों पर सबसे अधिक दिखने वाले मछली के चिह्न को द्रविड़ शब्द 'मीन' (Mīn) पढ़ा और दावा किया कि वहाँ एक अत्यंत शक्तिशाली शासक कबीला था जिसे 'मिनावन' (Minavan - मछली के लोग) कहा जाता था। फादर हेरास के अनुसार, आधुनिक मीना समुदाय इसी प्राचीन सिंधु सभ्यता के शासक वर्ग का सीधा उत्तराधिकारी है।

वैश्विक प्रतीकवाद (Symbology):
मानवविज्ञान के अनुसार, प्राचीन संस्कृतियों में गणचिन्ह (Totems) का बहुत महत्व था। नीदरलैंड के असीरियोलॉजिस्ट फ्रैंस विगरमैन की पुस्तक Mesopotamian Protective Spirits (1992) और ह्यूग फॉक्स की Gods of the Cataclysm (1976) में वर्णित मेसोपोटामिया के 'अकालू' (Apkallu) यानी "मछली-मानव" ऋषियों की परंपरा और सिंधु घाटी के 'मिनावन' के बीच के सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध यह दिखाते हैं कि मीना समुदाय का गणचिन्ह (एक सींग वाली मछली) प्रागैतिहासिक काल के वैश्विक समुद्री और नदीय नेटवर्क का हिस्सा था।

3. आनुवंशिकी (DNA Study) का अकाट्य प्रमाण:

प्राचीन स्वदेशी वंशजआधुनिक विज्ञान ने इतिहास के इन मौखिक और साहित्यिक दावों को प्रयोगशाला में पूरी तरह सिद्ध कर दिया है। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (Anthropological Survey of India - AnSI) द्वारा प्रकाशित वैज्ञानिक शोध पुस्तक Genomic Diversity in People of India (पृष्ठ
320) में राजस्थान के मीना समुदाय के Y-क्रोमोसोम (पितृवंश) का विस्तृत आनुवंशिक विश्लेषण किया गया है:
प्रागैतिहासिक मूल निवासी वंश (हैप्लोग्रुप H समूह और C5*): 7.6% - भारत की मिट्टी का आदिम हस्ताक्षर

* पश्चिम एशियाई नवपाषाण वंश (हैप्लोग्रुप J2b1): 3.8% - प्राचीन व्यापारिक एवं कृषि संपर्क
हैप्लोग्रुप L1 (Haplogroup L1) का प्रभुत्व: इस वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार, मीना समुदाय के पुरुषों में हैप्लोग्रुप L1 की आवृत्ति सबसे अधिक (35.8%) पाई गई है।वैज्ञानिक महत्व: जेनेटिक्स में हैप्लोग्रुप L1 को भारतीय उपमहाद्वीप का एक अत्यंत प्राचीन, स्वदेशी और मुख्य रूप से आदि- द्रविड़ (Proto-Dravidian) आनुवंशिक मार्कर माना जाता है। आधुनिक जीनोमिक अध्ययनों से सिद्ध हो चुका है कि सिंधु घाटी सभ्यता के निवासियों का आनुवंशिक ढांचा इसी द्रविड़ मूल का था।
हैप्लोग्रुप R1a1* (32.1%): इसके साथ ही समुदाय में यूरेशियन और इंडो- यूरोपियन संपर्कों को दर्शाने वाला R1a1* हैप्लोग्रुप और भारत के सबसे

शुरुआती निवासियों (Ancestral South Indian / AASI) से जुड़े H1a* और F* मार्कर भी पाए गए हैं।
यह DNA डेटा वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित करता है कि मीना समुदाय का एक बहुत बड़ा हिस्सा आनुवंशिक रूप से सीधे सिंधु घाटी सभ्यता के मूल निवासियों से जुड़ा हुआ है।

निष्कर्ष: इतिहास और विज्ञान का अनूठा संगमसाहित्यिक, मानववैज्ञानिक और आनुवंशिक तथ्यों को आपस में जोड़ने पर मीना (मीणा) आदिवासियों का एक बेहद गौरवशाली और अखंड इतिहास उभरकर सामने आता है:वैदिक साहित्य उनके 'मत्स्य' (मीन) जनपद के रूप में अरावली और चंबल के क्षेत्रों में हज़ारों साल पुराने राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व को दर्ज करता है।
मानवविज्ञान और फादर हेरास के सिद्धांत उनकी कला, गणचिन्ह (एक सींग वाली मछली) और पहचान को सिंधु घाटी के 'मिनावन' /मीना शासकों से जोड़ते हैं। आधुनिक डीएनए स्टडी (हैप्लोग्रुप L1 - 35.8%, H1,H2,C5,J2b1 लगभग 11.4%) इन सभी दावों पर विज्ञान की अंतिम मुहर लगाती है कि वे इस देश की मिट्टी के सबसे प्राचीन, स्वदेशी और सिंधु-सरस्वती सभ्यता के जीवित वंशज हैं।हज़ारों साल के ऐतिहासिक बदलावों, युद्धों और विस्थापनों के बावजूद, मीना समुदाय ने अपनी आदि-संस्कृति, प्रकृति-पूजा और 'मत्स्य' पहचान को आज भी पूरी जीवंतता के साथ सुरक्षित रखा है।

लेखक मोहर सिंह मीना
For -मीना आदिवासियो का इतिहास 070146 97306